Rev

Chapter 5

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

Καὶ	εἶδον	ἐπὶ	τὴν	δεξιὰν	τοῦ	καθημένου	ἐπὶ	τοῦ	θρόνου	βιβλίον,
और	मैंने-देखा	-पर	-उस	दाहिने-हाथ	-उस	बैठे-हुए	-पर	-उस	सिंहासन	पुस्तक,
G2532	G3708	G1909	G3588	G1188	G3588	G2521	G1909	G3588	G2362	G0975

γεγραμμένον	ἔσωθεν	καὶ	ὄπισθεν,	κατεσφραγισμένον	σφραγῖσιν	ἑπτά.
लिखी-हुई	अन्दर	और	पीछे,	मुहरबन्द-की-हुई	मुहरों-से	सात।
G1125	G2081	G2532	G3693	G2696	G4973	G2033

> फिर मैंने देखा कि जो सिंहासन पर विराजमान था, उसके दाहिने हाथ में एक लपेटा हुआ पुस्तक अर्थात् एक ऐसी पुस्तक जिसे लिखकर लपेट दिया जाता था। जिस पर दोनों ओर लिखावट थी। तथा उसे सात मुहर लगाकर मुद्रित किया हुआ था।

2

καὶ	εἶδον	ἄγγελον	ἰσχυρὸν,	κηρύσσοντα	ἐν	φωνῇ	μεγάλῃ,	Τίς	ἄξιος
और	मैंने-देखा	स्वर्गदूत	शक्तिशाली,	घोषणा-करता-हुआ	-में	आवाज़	बड़ी,	कौन	योग्य-है
G2532	G3708	G0032	G2478	G2784	G1722	G5456	G3173	G5101	G0514

ἀνοῖξαι	τὸ	βιβλίον,	καὶ	λῦσαι	τὰς	σφραγῖδας	αὐτοῦ?
खोलने	-वह	पुस्तक,	और	तोड़ने	-वे	मुहरें	उसकी?
G0455	G3588	G0975	G2532	G3089	G3588	G4973	G0846

> मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत की ओर देखा जो दृढ़ स्वर से घोषणा कर रहा था, “इस लपेटे हुए पुस्तक की मुहरों को तोड़ने और इसे खोलने में समर्थ कौन है?”

3

καὶ	οὐδεὶς	ἐδύνατο	ἐν	τῷ	οὐρανῷ,	οὐδὲ	ἐπὶ	τῆς	γῆς,	οὐδὲ	ὑποκάτω
और	कोई-नहीं	समर्थ-था	-में	-उस	स्वर्ग,	न-ही	-पर	-उस	पृथ्वी,	न-ही	नीचे
G2532	G3762	G1410	G1722	G3588	G3772	G3761	G1909	G3588	G1093	G3761	G5270

τῆς	γῆς,	ἀνοῖξαι	τὸ	βιβλίον,	οὔτε	βλέπειν	αὐτό.
-उस	पृथ्वी,	खोलने	-वह	पुस्तक,	न-ही	देखने	उसे।
G3588	G1093	G0455	G3588	G0975	G3777	G0991	G0846

> किन्तु स्वर्ग में अथवा पृथ्वी पर या पाताल लोक में कोई भी ऐसा नहीं था जो उस लपेटे हुए पुस्तक को खोले और उसके भीतर झाँके।

4

καὶ	‹ἐγὼ›	ἔκλαιον	πολὺ,	ὅτι	οὐδεὶς	ἄξιος	εὑρέθη	ἀνοῖξαι	τὸ	βιβλίον,
और	(मैं)	रोता-था	बहुत,	क्योंकि	कोई-नहीं	योग्य	पाया-गया	खोलने	-वह	पुस्तक,
G2532	G1473	G2799	G4183	G3754	G3762	G0514	G2147	G0455	G3588	G0975

οὔτε	βλέπειν	αὐτό.
न-ही	देखने	उसे।
G3777	G0991	G0846

> क्योंकि उस पुस्तक को खोलने की क्षमता रखने वाला या भीतर से उसे देखने की शक्ति वाला कोई भी नहीं मिल पाया था इसलिए मैं सुबक-सुबक कर रो पड़ा।

5

καὶ	εἷς	ἐκ	τῶν	πρεσβυτέρων	λέγει,	μοι,	Μὴ	κλαῖε.	ἰδοὺ,	ἐνίκησεν
और	एक	-में-से	-उन	प्राचीनों	कहता-है	मुझसे,	मत	रो।	देख,	जय-पाया
G2532	G1520	G1537	G3588	G4245	G3004	G1473	G3361	G2799	G3708	G3528

ὁ	Λέων	ὁ	ἐκ	τῆς	φυλῆς	Ἰούδα,	ἡ	Ῥίζα	Δαυίδ,	ἀνοῖξαι	τὸ
-वह	सिंह	-वह	-में-से	-उस	गोत्र	यहूदा-के,	-वह	जड़	दाऊद-की,	खोलने	-वह
G3588	G3023	G3588	G1537	G3588	G5443	G2448	G3588	G4491	G1138	G0455	G3588

βιβλίον,	καὶ	τὰς	ἑπτὰ	σφραγῖδας	αὐτοῦ.
पुस्तक,	और	-वे	सात	मुहरें	उसकी।
G0975	G2532	G3588	G2033	G4973	G0846

> फिर उन प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, "रोना बन्द कर। सुन, यहूदा के वंश का सिंह जो दाऊद का वंशज है विजयी हुआ है। वह इन सातों मुहरों को तोड़ने और इस लपेटे हुए पुस्तक को खोलने में समर्थ है।"

6

Καὶ	εἶδον,	ἐν	μέσῳ	τοῦ	θρόνου	καὶ	τῶν	τεσσάρων	ζῴων,	καὶ	ἐν
और	मैंने-देखा,	-में	बीच	-उस	सिंहासन	और	-उन	चार	प्राणियों,	और	-में
G2532	G3708	G1722	G3319	G3588	G2362	G2532	G3588	G5064	G2226	G2532	G1722

μέσῳ	τῶν	πρεσβυτέρων,	Ἀρνίον	ἑστηκὸς	ὡς	ἐσφαγμένον,	ἔχων	κέρατα	ἑπτὰ,
बीच	-उन	प्राचीनों,	मेमना	खड़ा-हुआ	जैसे	घात-किया-हुआ,	रखता-था	सींग	सात,
G3319	G3588	G4245	G0721	G2476	G5613	G4969	G2192	G2768	G2033

καὶ	ὀφθαλμοὺς	ἑπτά,	οἵ	εἰσιν	τὰ	ἑπτὰ	Πνεύματα	τοῦ	Θεοῦ,
और	आँखें	सात,	जो	हैं	-वे	सात	आत्माएँ	-उस	परमेश्वर-की,
G2532	G3788	G2033	G3739	G1510	G3588	G2033	G4151	G3588	G2316

ἀπεσταλμένοι	εἰς	πᾶσαν	τὴν	γῆν.
भेजे-गए	-में	सारी	-उस	पृथ्वी।
G0649	G1519	G3956	G3588	G1093

> फिर मैंने देखा कि उस सिंहासन तथा उन चार प्राणियों के सामने और उन पूर्वजों की उपस्थिति में एक मेमना खड़ा है। वह ऐसे दिख रहा था, मानो उसकी बलि चढ़ाई गयी हो। उसके सात सींग थे और सात आँखें थीं जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। जिन्हें समूची धरती पर भेजा गया था।

7

καὶ	ἦλθεν	καὶ	εἴληφεν	ἐκ	τῆς	δεξιᾶς	τοῦ	καθημένου	ἐπὶ	τοῦ
और	वह-आया	और	वहने-लिया	-से	-उस	दाहिने	-उस	बैठे-हुए	-पर	-उस
G2532	G2064	G2532	G2983	G1537	G3588	G1188	G3588	G2521	G1909	G3588

θρόνου.
सिंहासन।
G2362

> फिर वह आया और जो सिंहासन पर विराजमान था, उसके दाहिने हाथ से उसने वह लपेटा हुआ पुस्तक ले लिया।

8

Καὶ	ὅτε	ἔλαβεν	τὸ	βιβλίον,	τὰ	τέσσαρα	ζῷα	καὶ	οἱ	εἴκοσι
और	जब	उसने-लिया	-वह	पुस्तक,	-वे	चार	प्राणी	और	-वे	चौबीस
G2532	G3753	G2983	G3588	G0975	G3588	G5064	G2226	G2532	G3588	G1501

τέσσαρες	πρεσβύτεροι	ἔπεσαν	ἐνώπιον	τοῦ	Ἀρνίου,	ἔχοντες	ἕκαστος	κιθάραν
चार	प्राचीन	गिर-पड़े	सामने	-उस	मेमने,	रखते-हुए	प्रत्येक	वीणा
G5064	G4245	G4098	G1799	G3588	G0721	G2192	G1538	G2788

καὶ	φιάλας	χρυσᾶς,	γεμούσας	θυμιαμάτων,	αἵ	εἰσιν	αἱ	προσευχαὶ	τῶν
और	कटोरे	सोने-के,	भरे-हुए	धूपों-से,	जो	हैं	-वे	प्रार्थनाएँ	-उन
G2532	G5357	G5552	G1073	G2368	G3739	G1510	G3588	G4335	G3588

ἁγίων.
पवित्रों-की।
G0040

> जब उसने वह लपेटा हुआ पुस्तक ले लिया तो उन चारों प्राणियों तथा चौबीसों प्राचीनों ने उस मेमने को दण्डवत प्रणाम किया। उनमें से हरेक के पास वीणा थी तथा वे सुगन्धित सामग्री से भरे सोने के धूपदान थामे थे; जो संत जनों की प्रार्थनाएँ हैं।

9 καὶ ᾄδουσιν ᾠδὴν καινὴν, λέγοντες, Ἄξιος εἶ λαβεῖν τὸ βιβλίον, καὶ
और वे-गाते-हैं गीत नया, कहते-हुए, योग्य तू-है लेने -वह पुस्तक, और
G2532 G0103 G5603 G2537 G3004 G0514 G1510 G2983 G3588 G0975 G2532

ἀνοῖξαι τὰς σφραγῖδας αὐτοῦ; ὅτι ἐσφάγης, καὶ ἠγόρασας τῷ Θεῷ
खोलने -वे मुहरें उसकी; क्योंकि तू-घात-किया-गया, और तूने-मोल-लिया -के-लिए परमेश्वर
G0455 G3588 G4973 G0846 G3754 G4969 G2532 G0059 G3588 G2316

ἐν τῷ αἵματί σου, ἐκ πάσης φυλῆς, καὶ γλώσσης, καὶ λαοῦ, καὶ
-में -उस लहू तेरे, -में-से हर गोत्र, और भाषा, और लोग, और
G1722 G3588 G0129 G4771 G1537 G3956 G5443 G2532 G1100 G2532 G2992 G2532

ἔθνους,
जाति,
G1484

> वे एक नया गीत गा रहे थे: “तू यह पुस्तक लेने को समर्थ है, और जो इस पर लगी मुहर खोलने को क्योंकि तेरा वध बलि के रूप कर दिया, और अपने लहू से तूने परमेश्वर के हेतु जनों को हर जाति से, हर भाषा से, सभी कुलों से, सब राष्ट्रों से मोल लिया।

10 καὶ ἐποίησας αὐτοὺς τῷ Θεῷ ἡμῶν, βασιλείαν καὶ ἱερεῖς; καὶ
और तूने-बनाया उन्हें -के-लिए परमेश्वर हमारे, राज्य और याजक; और
G2532 G4160 G0846 G3588 G2316 G1473 G0932 G2532 G2409 G2532

βασιλεύσουσιν ἐπὶ τῆς γῆς.
वे-राज्य-करेंगे -पर -उस पृथ्वी।
G0936 G1909 G3588 G1093

> और तूने उनको रूप का राज्य दे दिया। और हमारे परमेश्वर के हेतु उन्हें याजक बनाया। वे धरती पर राज्य करेंगे।”

11 καὶ εἶδον, καὶ ἤκουσα φωνὴν ἀγγέλων πολλῶν κύκλῳ τοῦ θρόνου, καὶ
और मैंने-देखा, और मैंने-सुनी आवाज़ स्वर्गदूतों-की बहुतों घेरे -उस सिंहासन, और
G2532 G3708 G2532 G0191 G5456 G0032 G4183 G2945 G3588 G2362 G2532

τῶν ζῴων, καὶ τῶν πρεσβυτέρων; καὶ ἦν ὁ ἀριθμὸς αὐτῶν μυριάδες
-उन प्राणियों, और -उन प्राचीनों; और थी -वह संख्या उनकी लाखों
G3588 G2226 G2532 G3588 G4245 G2532 G1510 G3588 G0706 G0846 G3461

μυριάδων, καὶ χιλιάδες χιλιάδων;
लाखों-की, और हज़ारों हज़ारों-की;
G3461 G2532 G5505 G5505

> तभी मैंने देखा और अनेक स्वर्गदूतों की ध्वनियों को सुना। वे उस सिंहासन, उन प्राणियों तथा प्राचीनों के चारों ओर खड़े थे। स्वर्गदूतों की संख्या लाखों और करोड़ों थी

12 λέγοντες φωνῇ μεγάλῃ, Ἄξιόν ἐστιν τὸ Ἀρνίον τὸ ἐσφαγμένον, λαβεῖν τὴν
कहते-हुए आवाज़ बड़ी, योग्य है -वह मेमना -वह घात-किया-हुआ, पाने -वह
G3004 G5456 G3173 G0514 G1510 G3588 G0721 G3588 G4969 G2983 G3588

δύναμιν, καὶ πλοῦτον, καὶ σοφίαν, καὶ ἰσχὺν, καὶ τιμὴν, καὶ δόξαν, καὶ
शक्ति, और धन, और बुद्धि, और बल, और आदर, और महिमा, और
G1411 G2532 G4149 G2532 G4678 G2532 G2479 G2532 G5092 G2532 G1391 G2532

εὐλογίαν!
आशीष!
G2129

> वे ऊँचे स्वर में कह रहे थे: “वह मेमना जो मार डाला गया था, वह पराक्रम, धन, विवेक, बल, आदर, महिमा और स्तुति प्राप्त करने को योग्य है।”

13 καὶ πᾶν κτίσμα ὃ ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ
और हर जीव जो -में -उस स्वर्ग, और -पर -उस पृथ्वी, और
G2532 G3956 G2938 G3739 G1722 G3588 G3772 G2532 G1909 G3588 G1093 G2532

ὑποκάτω τῆς γῆς, καὶ ἐπὶ τῆς θαλάσσης ⸀ἐστίν⸁ καὶ τὰ ἐν αὐτοῖς
नीचे -उस पृथ्वी, और -पर -उस समुद्र (है) और -वे -में उन
G5270 G3588 G1093 G2532 G1909 G3588 G2281 G1510 G2532 G3588 G1722 G0846

πάντα, ἤκουσα λέγοντας, Τῷ καθημένῳ ἐπὶ τῷ θρόνῳ, καὶ τῷ Ἀρνίῳ,
सब, मैंने-सुना कहते-हुए, -उस बैठे-हुए-को -पर -उस सिंहासन, और -उस मेमने,
G3956 G0191 G3004 G3588 G2521 G1909 G3588 G2362 G2532 G3588 G0721

ἡ εὐλογία, καὶ ἡ τιμὴ, καὶ ἡ δόξα, καὶ τὸ κράτος, εἰς τοὺς
-वह आशीष, और -वह आदर, और -वह महिमा, और -वह सामर्थ्य, -में -उन
G3588 G2129 G2532 G3588 G5092 G2532 G3588 G1391 G2532 G3588 G2904 G1519 G3588

αἰῶνας τῶν αἰώνων.
युगों -के युगों-तक।
G0165 G3588 G0165

> फिर मैंने सुना कि स्वर्ग की, धरती पर की, पाताल लोक की, समुद्र की, समूची सृष्टि — हाँ, उस समूचे ब्रह्माण्ड का हर प्राणी कह रहा था: “जो सिंहासन पर बैठा है और मेमना का स्तुति, आदर, महिमा और पराक्रम सर्वदा रहें!”

14 καὶ τὰ τέσσαρα ζῷα ἔλεγον, Ἀμήν; καὶ οἱ πρεσβύτεροι ἔπεσαν καὶ
और -वे चार प्राणी कहते-थे, आमीन; और -वे प्राचीन गिर-पड़े और
G2532 G3588 G5064 G2226 G3004 G0281 G2532 G3588 G4245 G4098 G2532

προσεκύνησαν {ζῶντι εἰς τοὺς αἰωνας τῶν αἰώνων}.
दण्डवत-किया {(जीवित-को -में -उन युगों -के युगों-तक)}।
G4352 G2198 G1519 G3588 G0165 G3588 G0165

> फिर उन चारों प्राणियों ने “आमीन” कहा और प्राचीनों ने नत मस्तक होकर उपासना की।